मोहिनी-माला — ५

R I B E N I

"त्रि वे णी"

"त्रि-मू-र्त्ति"

"तीन 'तिरबेनी' व दो आंख मेरी
अब 'इ-ला-हा-बा-द' भी 'पं-जा-ब' है"

विज्ञ-वाचक-वृन्द !

यदि तीन तीन की नावक तोड़ से तबीयत
तड़फड़ायगी तो पांच पांच का पचड़ा
भी शीघ्र ही सुनाया जायगा !

त्रिवेणी-तरङ्ग तन्मय—

प्रयाग, १९७५, |
माघ—अमावस्या | "दे-वे-न्द्र"

लो !

लगावो "त्रिवेणी" में

'तीन तीन डुबकियाँ'

ज़ाहिर जागत सी 'य-मु-ना' जब बूड़ै बहै

उमहै वह 'बेनी'। त्यों ''पद्माकर'' 'हीरा

के हारन—गंग तरंगन' को सुख

देनी। 'पायन के रँग' सों रँगि

जात सी भांतिहिं भांति

'सरस्वति' सेनी। पैरे

जहां ई जहां वह

बाल तहां तहां

ताल में

होत

'त्रि-बे-णी'

••
•

बला से !

'अपनाओ तो सही'

तीन-तीन !!!

• • •

त्रिलोक नाथ की इस त्रिगुणात्मिका सृष्टि को तीनों नेत्र—(दो चर्म-चक्षु और एक विवेक-विलोचन)—से देखने पर तीन को तज कर, और कुछ नहीं पाया। घर-बाहर, आस-पास, पास-पड़ोस, ऊपर-नीचे, नेही-नाते; बस, जहां कहीं जाओ—देखोगे कि, तमाम तीन की ही तीव्र तरंग तमाशा कर रही है।

धर्म की दृष्टि से देखिये तो सारा संसार त्रिदेव की उपासना में उद्विग्न है। हिन्दुओं के घर में ब्रह्मा, विष्णु, महेश। मुसल्मानों के खुदा, पैग़म्बर, पीर। ईसाइयों के God the Son, God the Father, God the Holy Ghost. सभी गिनती में तीन ही हैं। अहा! प्यारे कृष्ण के पीत-पट, वंशी-वट, यमुना-तट! मर्य्यादापुरुषोत्तम रामचन्द्र के धनुष—तीर—तरकस।

तीर्थराज प्रयाग में पुण्य-पाथा सुरसरि, सूर्य्य-सुता, सरस्वती का सुहावना 'त्रिवेणी'—संगम। बौद्धों का त्रिपिटक।

जैनियों के देव, गुरु, शास्त्र तथा सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चारित्र। चित्रकूट की विकसित-वनस्थली के सीता-राम-लक्ष्मण। व्रज-रज-रंजक राधा, माधव, उद्धव। कृष्ण की क्रीड़ा-स्थली—मथुरा, गोकुल, वृन्दावन। प्रेम-देव कृष्ण की प्यारी प्यारी भोज्य-सामग्री—मेवा, मिश्री, माखन। भगवान का तीन तृप्तिकर प्रेम-भोजन—विदुर के घर बासी शाक, सुदामा का तीन मुट्ठी तण्डुल, शबरी की जूठी मीठी बेर। तीर्थों के सिरताज—अयोध्या, प्रयाग, काशी। भारतमाता के तीन 'राम'—रामचन्द्र, परशुराम, बलराम। हिन्दुओं के

तीन 'नाथ'—जगन्नाथ, वैद्यनाथ, पारस-नाथ। शंकर की तीनशक्ति-शालिनी मूर्तियाँ —विश्वेश्वर, रामेश्वर, सोमेश्वर। भारत के तीन बाल-ब्रह्मचारी—सनक, सनन्दन, सनत्कुमार। भारत के तीन योगी—विदेह, भीष्म, 'शुकदेव'। रामचन्द्र के तीन सेवक—सखा-सहायक,—हनुमान, सुग्रीव, जाम्बवान। तीन तपस्वी—कपिल, कणाद, कश्यप। तीन तेजस्वी मुनि—याज्ञवल्क्य, जाबालि, जमदग्नि। तीन महातपा मुनीश्वर—पराशर, पुलस्त्य, पातञ्जलि। तीन ऋषीश्वर—अत्रि, अंगिरा, अगस्त्य। तीन भजनानन्दी—

भृगु, भरद्वाज, भुशुण्डि। तीन प्राचीन क्रोधी मुनि—दुर्वासा, कौशिक, नारद। भारतवर्ष के तीन आत्मोत्सर्गी—शिवि, दधीचि, हरिश्चन्द्र। त्रेता के तीन हंसवंशावतंस—रघु, दिलीप, दशरथ। राक्षसों में परमेश्वर के प्रेमी तीन—प्रह्लाद, बलि, विभीषण। हिन्दुओं की तीन पूज्य पोथी—गीता, भागवत, रामायण।

तनिक ताको तो सही, त्रिपुरारि की जटा में तरलतरंगिणी त्रिपथगा—अहा! हाथ में त्रिशूल! बाल-विधु-विभूषित-भाल में शुभ्र-त्रिपुण्ड्र!! धन्य! त्रिलोचन का दिव्य-दर्शन ही तो त्रय-ताप-

तम-तरणि है ! त्रिकुटी पर नेत्र निश्चल करके तेजस्वी तपोधन त्रिकालज्ञ बन जाते हैं ! स्वर्ग-मर्त्य-पाताल हस्तामलकवत् हो जाता है !! त्र्यम्बक की कृपा से त्रिकूटाचल-स्थित कनक-रजत-रतन-रचित लंका-गढ़-बंका में डंका ठोकने वाले रावण, कुम्भकर्ण, विभीषण हुए। शैशव-काल में कृष्ण ने तीन उत्पाती उद्दण्ड दैत्यों को मारा—कंस, पूतना, केशी। पुनः रामचंद्र ने भी तीन उग्र उपद्रवी राक्षसों को मारा—मारीच, सुबाहु, ताड़का। कृष्ण ने तीन आततायी दुष्टों का प्राण लिया—कालयमन, शिशुपाल, जरासन्ध। रामचंद्र ने

भी तीनही पर सूर्पणखा का तकरार तै किया—खर, दूषण, त्रिशिरा।

वन में रामजी के तीन भारी शिकार —कबन्ध, विराध, वालि। गोपालकृष्ण की तीन प्यारी वस्तुएँ—लकुटी, मुरली, काली कमरिया।

सीताजी को 'त्रिजटा' ने सान्त्वना दिया। 'त्रिशंकु' को विश्वामित्र ने स्वर्ग पठाया। 'त्रिगर्त्त' का राजा सुशर्म्मा, अभिमन्यु के वध का कारण हुआ।

'त्रिफला' से दैहिक-दु:ख-दलन होता है, तो प्रभुजी का नाम भी भव-भय-भेषज है। बाल-युवा-वृद्ध सुर-नर-निश्चरों का

यह कर्त्तव्य है कि, मनसा-वाचा-कर्मणा से उस प्रभु-प्रवर की प्रार्थना करें ।

भारत में तीन प्रधान धर्म्म प्रचलित हैं—हिन्दू धर्म, जैनधर्म, बौद्धधर्म्म। हिन्दू धर्म में तीन पार्टी—वैष्णव, शैव, शाक्त। सनातनधर्म्मियों में तीन दल—द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत । जैनियों में फिर तीन ही पार्टी—सेठपार्टी, बाबूपार्टी, पण्डित पार्टी। आर्य्यसमाजियों में भी तीन पार्टी है—घास-पार्टी, मांस-पार्टी, गुरुकुल-पार्टी। हिन्दुओं के यहाँ तीन विचित्र बातें हैं—जाति, श्राद्ध, मूर्त्ति-पूजा। बौद्धों में भी तीन देखिये—जिन,

बुद्ध, अर्हन्। जैनियों के भी तीन फ़िर्के—दिगम्बर, सिताम्बर, ढूँढिया। ब्राह्मणों में तीन प्रसिद्ध पदवी—"द्विवेदी"—त्रिवेदी—"चतुर्वेदी"। आर्य्यसमाजी भाइयों को झगड़ा करने के लिए तीन ही विषय हैं—श्राद्ध, विधवा-विवाह, मूर्त्तिपूजा। ईसाइयों के घर भी तीन ही सिद्धान्त अटल हैं—Love, Hope, Charity. भारत के तीन भयंकर स्वामी—रामतीर्थ, विवेकानन्द, दयानन्द। हिन्दुओं की तीन व्रत-तिथि महा-पवित्र कही जाती हैं—अष्टमी, नवमी, एकादशी। इधर नरक, स्वर्ग, अपवर्ग—उधर

अपवर्ग में तीन वर्ग—कैवल्य, सायुज्य, सामीप्य। (परमपद).

कविता-कानन-केशरी तीन—वाल्मीकि, व्यास, कालिदास। प्राचीन तीन वक्ता—सूत, संजय, वैशम्पायन। नीति-निपुण-नरोत्तम तीन—शुक्र, विदुर, चाणक्य। शरासन में तीन श्रेष्ठ—शारङ्ग, पिनाक, गाण्डीव। तीन विलक्षण पुरी—द्वारका, अलका, अमरावती। भारत के तीन भरत—दशरथ के भरत, दुष्यन्त के भरत, भगत जड़-भरत।

जगन्नायिका भी तीन ही हैं—उमा, रमा, शारदा। सती-शिरोमणि देवियाँ

भी तीन ही हैं—सीता, सावित्री, सुलो-
चना। तीन पवित्र-प्रेमिकाएँ—राधा,
रुक्मिणी, शकुन्तला। पञ्चकन्याओं में
तीन वीर-गर्भा—कुन्ती, तारा, मन्दोदरी।
वीर-प्रसविनी क्षत्राणियाँ तीन—सीता,
सुभद्रा, सुदक्षिणा। तीन यशस्विनी क्षत्रा-
णियाँ—देवकी, दमयन्ती, द्रौपदी। तीन
वीरमाताएँ—कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा।
लब्ध-कीर्त्ति ललनाएँ—यशोदा, मैना,
सुनैना। तीन आदर्श ऋषिपत्नियाँ—
अहिल्या, अनसूया, अरुन्धती। तीन
प्रधान सुराङ्गनाएँ—रम्भा, मेनका,
उर्वशी।

तुलसीदास ने तीन का तम्बू कैसा ताना है ! अहा !! "........संसार महँ पुरुष त्रिविध—पाटलि, रसाल, पनस-समा। एक सुमनप्रद, एक सुमन फल, एक फलै केवल, लागहीं। एक कहहिँ, कहहिँ करहिँ अपर, एक- करहिँ कहत न, बागहीं।"—*श्रीरामवाक्य*।

संसार की तीन गति—भव, विभव, पराभव। देही की तीन दशा—जरा, मरण, मोक्ष। सृष्टि-स्थिति-संहार के तीन मुख्य साधन—पाथ, पवन, पावक। संसार के सुखियों में मुखिया तीन—सन्तोषी, स्वतन्त्र, सच्चरित्र। संसार में

तीन दुखिया—पराधीन, ऋणी, लोभी। विधि की बाँकी टाँकी की तीन झाँकी—पंडित की पत्नी कलह-कारिणी, सुन्दरी युवती का पति कुरूप, कवि-कोविद-दरिद्र। गृहस्थों का जीवन सुखमय बनाने वाली तीन सामग्री—प्रियवादिनी प्रिया, आज्ञाकारी आत्मज, विश्वस्त सेवक। गृहस्थों के घर की तीन शोभा-सामग्री—सवत्सा सुरभि, सुलक्षणा सुमुखी, सुन्दर सुवन। बिना आग के जलने वाले तीन—ईर्ष्यी, द्वेषी, निन्दक। छाया करने वाले तीन—छत, छप्पर, छाता। जवाँमर्द के तीन हथियार—ढाल, तलवार, बर्छी। टहलने

वालों के लिये तीन चीज़—घड़ी, छड़ी, जूता। नरों में निपुण—नौश्रा, चिड़ियों में चतुर—कौश्रा, चैापायों में चालाक—शृगाल। तीन श्रछूत जाति—धरिकार, धीवर, धोबी—(जासु छाँह छुइ लेइय सींचा)। डाक्टरों के तीन उपदेश—पाँव गर्म—शीश शीतल—हृदय शान्त। हकीमों के तीन हुक्म—कम खावो, कम सोवो, कम बोलो। वैद्यों की तोड़ा ऐंठने की तीन तदबीरें—मनुष्य मात्र को रोगी साबित करना, रस-चूर्ण-वटिका—तीन तरह की दवा का दाम माँगना, रोगी की माता

के आँसू से औषधि पिसवाना।—धन्य !!!
प्रतापी पुरुष का चरण-चिह्न—अंकुश, कलश, कुलिश। वीरों को विजय वितरण करने वाली तीन दृढ़ वस्तुएँ कही जाती हैं—ध्वजा, धनुष, धुरा। पुरुषत्व के तीन प्रमाण—पौरुष, पराक्रम, प्रभुता। पुरुषों में तीन प्रशंसनीय—वीर, धीर, धृष्ट। जीते जागते तीन मुर्दे—कायर, क्रोधी, क्रूर। तीन महा पापी—कपटी, कामी, कृतघ्न। तीन पुण्यात्मा—सत्यवादी, सत्संगी, सदाचारी। सज्जनों का हृदय—(नवनीत)—सरल, निर्मल, कोमल। गृहस्थों के तीन प्रधान काम—

कृषि-कर्षण, पशु-पोषण, अभ्यागत-स्वागत। महात्मा के तीन गुण—क्षमा, दया, शान्ति। बटोही के साथ तीन चीज़ें चाहिये—कम्बल, कमण्डल, डोरी। परदेशी को तीन चीज़ दुरुस्त रखना चाहिये—बाकस, बरतन, बिछावन। अजीर्णनाशक तीन उपाय—वमन, विरेचन, शयन। बुढ़ापे के शिकार तीन—आँख, दाँत, केश। मनुष्यों की तीन स्वाभाविक आवश्यकताएं—अशन, वसन, शयन—Bread, Butter, Bed. शरीर के तीन सुकुमार स्थान—नेत्र, नासिका, हृदय। प्रणाम करने के तीन

तर्ज़—हिन्दुओं में दोनों हाथ से, मुसल्मानों में एक हाथ से, अँग्रेज़ों में टोपी से। कपड़े तीन तरह के—ऊनी, रेशमी, सूती।

जनाब आली! ज़रा नज़र फेरिये—ज़न, ज़मीन, ज़र—तीनों झगड़े के घर। "प्यारे! तन, मन, धन, तीनों की तिलाञ्जलि देकर देश का दारिद्र्य-दुःख दूर करो!! रोग-शोक-परिताप-पूर्ण कलियुग कपार पर क्रीड़ा करता है— बस, यंत्र-मंत्र-तंत्र सभी षड्यंत्र मचायेंगे यदि 'जगन्नाटक-सूत्र-धर'—'सत्-चित्-आनन्द'—गोविन्द मुकुन्द को भूलोगे।"

भाषा, भेश, भोजन—तीनों की रक्षा करो। देश, काल, पात्र—तीनों देख कर, सँभाल कर, दान दो। कुर्ता, धोती, टोपी—सादा पहनावा पहनो। दही, दाल, दनौड़ी,—हलवा, पापड़, पकौड़ी,—खीरा, ख़रबूज़ा, ककड़ी,—पेड़ा, पियाव, पपड़ी,—सारे प्रपंच पापी पेट के पसारे हुए हैं।

फिर देखिये—ख़ानगी, ख़ास, सरकारी,—कुर्सी, टेबल, आलमारी—सभी तीन की तह में पड़े हैं। लेखक, पाठक, सम्पादक—तीनों में परस्पर प्रीति होती है। क़लम, दावात, कागज़—

शिक्षक, छात्र, पुस्तक,—तीन तीन का नाता गाढ़ा होता है। तीन लिङ्ग—पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, क्लीवलिङ्ग। कार्ड, लिफ़ाफ़ा, टिकट,—तीनों चीज़ें विकट—पोष्टमैन के निकट। स्कूल – कौलिज—युनि-वर्सिटी। C.H.C., D.A.V., M.A.O. भारत में तीन प्राचीन हस्तलिपि का संग्रहालय;—एशियाटिक सोसाइटी बङ्गाल, कलकत्ता (लाइब्रेरी)—थियो-सोफ़िकल लाइब्रेरी, अदयार (मद्रास) —लाइब्रेरी खुदाबख़्शख़ाँ, पटना। भारत में तीन नये समाज—थियोसोफ़िकल समाज, ब्रह्म-समाज, आर्य्यसमाज।

अँग्रेज़ी शिक्षा की तीन तीन डिगरियाँ—एफ़०ए०,बी०ए०,एम०ए०; -Engineering, Law, Medicine. । वाह रे तीन !!!

वैज्ञानिक विचित्रता के फल तीन—टेलिग्राफ़, फ़ोटोग्राफ़, फ़ोनोग्राफ़ । देहाती मेवा भी तीन—गरी, छुहाड़ा, मुनक्का । इधर राज, रयासत, परजा—उधर मंदिर, मसजिद, गिरजा,—सब में एकता की आवश्यकता है । अफ़सरों का उहदा देखो—कलकटर, कमिश्नर, लाट,—मुनसिफ़, सदराला, जज । डाकटर, एडिटर, वारिष्टर—तीनों की

टेढ़ी टर्र; स्वास्थ्य, विद्या, वैभव—तीनों तीन का सञ्चय करते हैं।

भारत की तीन बड़ी रेलवे लाइनें—ई० आई० आर०, ओ० आर० आर, जी० आई० पी०। जल-थल-नभ-चारी विमान—जहाज, रेल, ज़ेप्लिन। मेल, एक्सप्रेस, पासेञ्जर—तीन तरह की रेल-गाडियाँ। बग्घी, फ़िटन, टमटम—मोटर, साइकिल्, ट्राम,—हाथी, घोड़े, ऊँट,—सवारी की सहज सामग्री। थियेटर, बायस्कोप, सरकस,—फिर, रामलीला—रासलीला—लोकलीला। जल-सेना, थल-सेना, वायुसेना—कल, बल,

छल। अँग्रेज़ी राज्य के तीन प्रत्यक्ष फल—बिजली की रोशनी, बिजली का पंखा, कलावती-गंगा।

Nature की तीन बातें—Heat, Light, Sound. जाड़ा, गरमी, बरसात—तीन आम मौसम। तीन मनोहर ऋतु—हेमन्त, वसन्त, पावस। तीन पूज्य तिथि—दूज, पूनो, अमावस। हिन्दुओं में तीन त्यौहार—दशहरा, दीवाली, होली। तीन मौसम-बहारी गीत—चैती, होरी, कजरी। चैत की चाँदनी, जेठ की दुपहरी, भादों की अँधेरी रात। तीन युग बीत गये—सत्य, त्रेता, द्वापर। तीन असल

अवस्था—जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति। दिवस, मास, वर्ष,—व्यर्थ मत बिताओ—हरि-गुण-ग्राम गाओ। त्रिसंध्याराधन के तीन साधन—गीता, गंगा, गायत्री। समय, साहस, सम्पत्ति—इन तीनों का उपयुक्त उपयोग करो।

संसार के तीन मुख्य महादेश—एशिया, यूरोप, अमेरिका। भारत भी 'त्रिकोण' है। अङ्ग, वङ्ग, कलिङ्ग, और काम्बोज, काश्मीर, कर्णाटक तथा मगध, अवध, व्रजमंडल—जहाँ ताको तहाँ तीन ही की तैयारी। पवित्र पर्वतों में तीन पूज्य—विंध्य, चित्रकूट, हिमालय।

भारत की तीन धर्म-धारावली—नर्मदा, गंगा, गोदावरी। तीन महानद—सिन्ध, शोण, ब्रह्मपुत्र। तीन पुण्यारण्य—नैमिष, दण्डक, पञ्चवटी। पाश्चात्य देश की तीन महानगरी—लन्दन, नवार्क, पेरिस। भारत की तीन महानगरी—बम्बई, कलकत्ता, मद्रास। भारत में मुसल्मानी राजधानी तीन—दिल्ली, आगरा, लखनऊ। बंगाल की तीन नवाबी गद्दी—पटना, मुँगेर, मुर्शिदाबाद। भारत के तीन प्राचीन विद्यापीठ—नालंद, तक्षशिला, वाराणसी। बौद्धों के तीन तीर्थ—बोधगया, सारनाथ, कपिलवस्तु। जैनियों के तीन तीर्थ—

सम्मेद-शिखर, कैलाश, पालिताना। भारत के तीन नगर—श्रीनगर, रामनगर, कृष्णनगर।

यूनान के तीन फ़िलासफ़र—सुक़रात, बुक़रात, अफ़लातून। पूर्वीय साहित्य के प्रगाढ़ प्रेमी—मोक्षमूलर, कूलवृक्ष, जयकवि। अँग्रेज़ी साहित्य के Three Kings; 'Shakespeare, Dickens, Scott.' भारत के तीन प्रसिद्ध प्राचीन सम्राट्—चन्द्रगुप्त, अशोक, कनिष्क। संसार को चिकित्सा का परिचय दिलाने वाले तीन भारतीय—चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट। भारत में तीन धर्म-नेता संन्यासी—महावीर,

बुद्धदेव, चैतन्यदेव। बंगाल के तीन सुधारक—विद्यासागर, राममोहन, केशव। बंगाल के तीन पुरुषपुङ्गव—[1]मुकर्जी, [2]पालित, "[3]घोष"। तीन बंग-रत्न—[4]बोस, [5]सील, [6]विनय। बंगसाहित्य-सम्राट्—वंकिम, मधुसूदन, [7]ठाकुर। भारत के तीन विख्यात व्याख्याता—वासन्ती, [8]बनर्जी, मालवीय। भारत-भारती के तीन सपूत—[9]बाल, [10]पाल, [11]गोपाल। दिल्लीश्वर के दरबारी दल के

(१) सर आशुतोष। (२) तारकनाथ। (३) रा० वि०। (४) Dr. J. C. (५) बृजेन्द्रनाथ। (६) सरकार। (७) Tagore. (८) सुरेन्द्र। (९) तिलक (१०) विपिनचन्द्र। (११) गोखले।

फ़ैज़ी, वीरबल, टोडरमल। भारत के तीन प्रसिद्ध प्रेस—निर्णयसागर, वेङ्कटेश्वर, इण्डियन। भारत में तीन विदेशी आगंतुक—मैगेस्थनिज़, फ़ाहियान, ह्युशङ्ग। हिन्दुस्तान के तीन हितकारी लाट—रिपन, कर्ज़न, हार्डिञ्ज। हिन्दुस्तान के तीन विदेशी हितैषी—ह्यूम, हेनरी काटन, विलियम वेडरबर्न। उत्तरीय भारत में हिन्दी के पुराने मकं सेवक तीन प्रेस—खड्ग-विलास, भारतजीवन, नवलकिशोर। स्त्री-समाज में तीन अच्छी पत्रिकाएँ—चांद, स्त्री-दर्पण, गृहलक्ष्मी। हिन्दी के तीन पुराने पत्र—वङ्गवासी, वेङ्कटेश्वर,

भारतमित्र । हिन्दी की तीन प्रसिद्ध मासिक पुस्तकें-'जगत्, मर्यादा, सरस्वती'। हिन्दी-साहित्य-इतिहास-लेखक तीन मिश्र बन्धु—श्याम, शुक, गणेश—विहारी। पदलालित्य के हेतु प्रख्याति-प्राप्त संस्कृत के सुकवि—जयदेव, दण्डी, जगन्नाथ। अँग्रेज़ी साहित्य में तीन प्रेमी कवि— Keats, Shelley, Whitman. । हिन्दी प्रेमी मुसल्मान कवियों में तीन बड़े—कबीर, रहीम, रसखानि। हिन्दी-साहित्याकाश के तीन ही सूर्य्य-शशि-नक्षत्र कहे जाते हैं—सूर, तुलसी, केशव। हिन्दी-साहित्य-सरोवर के तीन हंस—पृथ्वी, पजनेस,

पद्माकर। हिन्दी-साहित्योद्यान में वसन्त बुलानेवाले—भूषण, भिखारी, भारतेन्दु। हिन्दी के तीन भावुक कवि—द्विजदेव, दीनदयाल, दुखभंजन। हिन्दी के तीन प्रौढ़ कवि—श्रीपति, सुमति, सेनापति। अलंकृत हिन्दी-साहित्य को दर्पण दिखलाने वाले—दास, देव, दुलह। हिन्दी-साहित्य-सरोज के रसिया भौंरे—बिहारी, बरदाई, बेनी। भारत में तीन विदेशीय प्रेमिकाओं की प्रतिष्ठा—लैली, शीरीं, जूलियट।

अहा! ३१ वीं इण्डियन नेशनल कांग्रेस के माननीय सभापति श्रीयुत 'अ-म्बि-का

च-र-ण' मजुमदार ने गत २६ दिसम्बर १९१६ को लखनऊ में अपने सारगर्भित सम्भाषण में 'त्रि-वे-णी' की कैसी 'अ-मो-घ—म-हि-मा' दर्शाई है:—

"It was for you that in the early morning of the world the VEDAS were revealed and in a later period democratic Islam came with the KORAN and the practical Parsi with the ZENDA-AVESTA. Yours is the heritage of 'Three' of the most ancient civilisations of the world which have formed as it were a 'Glorious Confluence of THREE STREAMS (त्रिवेणी)' in this Sacred Land of yours."

"आपके लिए ही सृष्टि के आरंभ में 'वेदों' का आविर्भाव हुआ था। कुछ काल पीछे सार्वजनिक इस्लाम 'कुरान'

के साथ और कार्यक्षमी पारसी 'ज़ेन्द-अवस्था' के साथ आयें। उन 'तीन' प्राचीन सभ्यताओं के आप उत्तराधिकारी हैं। जिनका "गङ्गा–यमुना—सरस्वती" की भांति आपकी 'पुण्य-भूमि में सं-ग-म,' हुआ है।"

प्रिय-पाठक-प्रवर ! अभी अभी ता० १५ जनवरी १९१७ को 'प्र-या-ग' के 'ली-ड-र' प्रेस के आँगन में एक आदर्श-अङ्गना 'वासन्ती-वसीठी' सी भारतका-व्योमयानकलकण्ठी — मातृभूमि-मानस-मरालिनी— कामिनी-कुल-कुमुदिनी-कौ-मुदी — साहित्य-सरोवर-'सरोजिनी' —

श्रीमती सौभाग्यवती विदुषी विश्वविनो-
दिनी 'सरोजिनी' नायडू ने किस तरह
"त्रि-वे-णी" की तारीफ़ की है :—

"There were three vision that come to every man in his lifetime and it was in the following and fulfilment of these visions that every soul found its harmonious development—the vision of LOVE, the vision of Religion and the vision of Patriotism. The vision of LOVE, the vision of Religion and the vision of Patriotism are the "Three Visions" that make of a brute a man and of a Man a God . . . . We are too apt to think that the legend of India is only the SANGAM of the Ganges and the Jamuna—. There are other rivers, though they may appear small in comparison to the Great Rivers, that must 'unite,' there are tributaries . . . . . and something greater than the "TRIBENI"—(त्रिवेणी)

is to be before the 'River of Love' which will flow towards the 'Sea of Glory'—that 'River of Life' that is called the 'River of United India' !!!"

"हिन्दू-मुसल्मान-ईसाई,
चखो परस्पर-प्रेम-मिठाई."

सं-क्षि-प्त सा-रां-श—मा-न-व जी-व-न में तीन अ-द्भु-त आ-भा-स हैं जो प्रत्येक मनुष्य के जीवन में प्रदर्शित होते हैं—विश्वप्रेम का आभास, धर्म का आभास, देशानुराग का आभास। इन तीनों सदाभासों की सम्पूर्णता होने से असली आध्यात्मिक उन्नति होती है। इन तीन आभासों की अलौकिक शक्ति से म्लेच्छ भी मनुष्य और पुरुष भी

परमात्मा में परिणत हो जाता है। सभी नद नदियाँ नदीश के पेट में पैठी हैं, क्योंकि उनमें सम्मिलित होने की प्रेम-शक्ति भरी है। किन्तु, जो सत्ता-महत्ता भारतवर्ष के 'जा–ह्न–वी य–मु–ना-सलिल-संगम' में है, जो स्नेहस्रोत 'त्रिवेणी' के हृदय में लहरा रहा है, वह दिव्यदर्शन और कहीं भी नहीं मिलता। अहा! उससे भी कहीं महत्त्व-पूर्ण इन 'तीन प्रेम-प्रवाहों का संगम' है—इन 'तीन प्रेमाभासों का सम्मिलन' है—जो 'त्रिवेणी' की तरह 'संयुक्त' होकर एक धवल धारा के रूप में; यश और प्रताप

के सागर में जा मिलेगा। बस, यही है जीवन-शक्ति की धारावली—अथवा, सम्मिश्रित-भारतीय-शक्ति की धारावली!!!

अब आगे अवलोकिये—पशुओं में तीन रत्न—ऐरावत, उच्चैःश्रवा, कामधेनु। पक्षियों में भी तीन—गरुड़, हंस, मयूर। कलरव-कारी तीन पक्षी—शुक, पिक, चातक। वायु को स्वच्छ करनेवाले तीन वृक्ष—निम्ब, तुलसी, आमलक। बृहदाकार वृक्ष तीन—वट, पिप्पल, पर्कटी। पावन पादपों में पूजनीय—कल्पद्रुम, कदम्ब, रसाल। तीन विख्यात बनैले वृक्ष—खदिर, कपित्थ,

तमाल। मीठे फलों में तीन अच्छे—आम केला, केवला। सुगंधित फूलों में तीन अच्छे—गुलाब, कमल, केवड़ा। विषमता विनाश करनेवाले तीन फल—तूत, नारंगी, नीबू। शीतल फलों में तीन ताज़े—अमरूद, अनार, अँगूर। पेट की पीड़ा पचाने में तीन प्रबल फल—फालसा, श्रीफल, जम्बूफल। भारी फलोंवाले तीन पेड़—ताड़, बेल, कटहल। मेवा में भी तीन तीन का मेल—किशमिश, अखरोट, बादाम; पिस्ता, चिलगोज़ा, चिरौंजी। लताओं में तीन लचकदार—प्रियङ्गु, मालती, माधवी। कोमल

कुसुमवाले वृक्ष—शृंगारहार, शिरीष, बकुल। प्राचीन उपन्यास की तीन प्रधान-पात्री—कादम्बरी, महाश्वेता, मदलेखा।

प्यारे पाठको! पलँग पर पौढ़ कर देखो तो प्रेम-संसार में भी तीन ही की तूती बोलती है। प्रेम—प्रेमी—प्रेमिका—यह प्रसिद्ध ही है। "प्रेम-मंदिर की प्रकाशित प्रेमोपहार-माला में भी तीन तरुणारुण-तामरस खिले हुए हैं—प्रेमकली, प्रेमशतक, प्रेमधर्म्म। प्रेमानुभव, प्रेमपूजा, प्रेमतत्त्व—सर्व्वोऽहम्, निःस्वार्थ विश्वसेवा, आत्मीयभाव"—यह तीन तीन भी एक ही तागे में

गुथे हैं—जैसे द्विजाति त्रिसूत्र में। त्रिवर्ग में भी प्रेम ही की प्रधानता है। माता, पिता, पुत्र में भी स्वर्गीय-स्नेह-सुधासञ्चार देखो। तमाम तीन का ही तर्क है। सुन्दरी युवतियां के अञ्चल में तीन फूल—क्रीड़ा, व्रीड़ा और पीड़ा भी। कामी विलासियां के तीन चिन्त-नीय विषय—ललना की लावण्य-लीला, युवतियां का यौवन-विलास, नवोढ़ा नायिकाओं का हास-परिहास। प्रेमपुर में तीन पञ्च—चुम्बन, परिरम्भण, प्रथम-दर्शन। नव युवतियां के तीन अनु-भवनीय—दर्शनीय—पदार्थ—सौन्दर्य,

सौकुमार्य्य, माधुर्य्य। स्त्रियां के तीन शस्त्र—कटाक्ष, मन्दस्मित, लज्जा-पूर्ण हाव-भाव। प्रेम-संसार में तीन ही शब्दों का साम्राज्य—एकान्त, स्वप्न, आशा। तागड़ी-भूषित त्रिवली-तरंग में नाभि-भँवर की शोभा भी सरस है। नव—वधूटियां के तीन लोल-ललितभूषण—कुण्डल, बेसर (नासा-मौक्तिक), हार। चारु चन्द्रानन के मुख्य अंग तीन—नयन, अधर, कपोल। मयंक-मोहन मुख के सुखमा-संवर्द्धक तीन—तिल, अलक, बिन्दी। सोहागिन सुन्दरियां के भव्य भूषण—नूपुर, कंकण,

चूडामणि। विलासिनी बालाओं के तीन प्रधान परिष्कार—कज्जल, ताम्बूल-रञ्जन, गुल्छग्रथितवेणी। तमाम तो तीन ही का तुक तुला हुआ है। "सूर्य-'सरोजनी', मधुकर,—माली, चमन, बुलबुल,—चम्पा, चन्दन, चंद्रिका,—चातक, चक्र, चकोर,—केसर, कस्तूरी, कपूर,—मीन, मृग, मयंक,—तेल, फुलेल, कुङ्कुम,—लाची, लवँग, पान,—शीतल, मंद, सुगंध."—अजी, अब अनुमान कर लो, "काहि काहि को धारों नाम? कम्बल ओढ़ सिगरे ग्राम!"

प्यारे! आशा, अभिलाषा, अभि-

मान से अलग रहो—विषयवासना से विरक्त होकर श्रद्धा, भक्ति, मुक्ति—ज्ञान, योग, वैराग्य,—इनसे प्रीति करो। निष्काम, निष्कलंक, निष्कपट होकर उस निरामय, निर्लेप, निरञ्जन को निशिवासर भजो—नित्यम्प्रति निगमागम जिसका नेति नेति गुण गाते हैं—बतलाते हैं कि, निर्वाण का निवास वहीं है।

वाह! तीन की छान-बीन तो ख़ूब हुई!! दुनिया में कोई भी तीन की त्रिभंगी चाल में आये बिना न रहा। अजी, बखेड़ा बटोरने से क्या? सारे संसार की बातों की शिक्षास्थली तो

अपना घर ही है। वहीं से तो सब कुछ सीखते हैं। तीन तीन की तलाश में सारी सृष्टि ढूँढ़ डाली और अपना घर अब तक नहीं देखा। क्या खूब? यह तो वही 'चिराग़ तले अँधेरा' वाली मसल हुई। ख़ैर, सुबह का भूला शाम को घर आ जाय, तो भूला नहीं कहलाता। तब न सही तो अब ही सही।

तड़के उठ कर तीन काम करना ज़रूरी है—शौच, स्नान, सन्ध्यावन्दन। सन्ध्यावन्दन करने के समय पूरक, रेचक, कुम्भक, तीनों तरह से प्राणायाम करना पड़ता है। तदुपरान्त दाल, भात,

भाजी अथवा रोटी, दाल, घी, तथा दूध, दही, मलाई, जो कुछ जुरा मिला खा पीकर अपने रोज़ी-रोज़गार में लगना ज़रूरी है—नहीं तो जीवन-यापन करना कठिन है।

जो काम-धन्धा बनज-व्यापार नहीं करता वह यदि अनब्याहा होगा तो संसार में दम्भ, दुष्कर्म और अधर्म की धारा बहायेगा। विवाहित होने पर अपने बीबी और बच्चे के पेट भरने की फ़िक्र में देह गलायेगा—बस, तीनों के जीवन भार हो जायँगे। 'दीनानाथ' की दया से यदि स्त्री सीता, सावित्री,

दमयंती की सी पति की तीनों काल, तीनों लोक तथा तीनों अवस्थाओं में संगिनी रह कर ही सन्तोष सँभालने वाली हुई, तब तो ठीक है—नहीं तो बस, तीनों वक्त तड़ातड़ जूतियाँ खसम की खोपड़ी पर तड़तड़ाया करेंगी। जिससे उसे संसार नरक का चचा-ज़ाद भाई मालूम पड़ेगा।

हाँ—'घर घर घूमा देखा—तो पाया एकी लेखा'। बिगड़े-दिल-नौजवान वेश्या-वारुणी-पान के ध्यान में हैं तो घर-गृहस्थी वाले नोन-तेल-लकड़ी की चिन्ता से चूर हैं। उत्तम, मध्यम, नीच—तीनों

श्रेणी के मनुष्य, गृहस्थी के जाल में जकड़ कर, वैसे ही छटपटा रहे हैं जैसे मकड़ी अपने ही जाल में बेहाल है। लेकिन प्रशंसा उसी की है जो इस घोर जंजाल में घुटा-जुटा रहने पर भी उस त्रिलोक-नायक भगवान् को नहीं भूलता। ब्रह्मचर्य्य, वाणप्रस्थ और संन्यास—तीनों आश्रमों से, गृहस्थाश्रम इसलिए अच्छा समझा गया है कि, इस में रह कर मनुष्य को अपने आत्मबल को दिखलाने का अच्छा अवसर मिलता है। गृहस्थाश्रम में प्रलोभन की तीनों बातें हैं—संपत्ति, संगति, संगिनी। जो

इन में बुरी तरह नहीं फँसता वही धीर, वीर और बुद्धिमान है। इस आश्रम में सचमुच बड़ा सुख है। शेष तीनों आश्रमोंवाले इसी के बल पर टिके हैं। कोर्ट-कचहरी के कामों से छुट्टी पा, घर आकर, पुरुष जब थका-माँदा अपने आँगन में प्रवेश करता है; तब प्राण-प्यारी प्रणयिनी सामने आकर मीठी मीठी बातों से उस के मन को मोहते हुए पैर, हाथ, मुँह धोने के लिए जल; नाश्ते के लिए पूरी, कचौरी, मिठाई या फल; लाकर सामने रखती है। और, गर्मी का दिन हुआ तो हाथ में पंखा ले, धीरे धीरे त्रिविध

बयार का सञ्चार करती है। ईश्वर की देन से यदि गोद भरी-पूरी हुई, तो नन्हा सा बच्चा अपनी माँ की गोद में किलकता हुआ, अपने प्यारे पिता को देख देख कर फूला नहीं समाता, और अव्यक्त भाषा में अपना प्रेम प्रकट करता है। तीनों की प्रेम-प्रवाहें 'त्रिवेणी' की तरह, एक धार होकर, बहने लगती हैं। भला! इसके आगे स्वर्ग-सुख क्या है? संसार में रमणी ही तो स्वर्ग की देवी है। कन्या, माता और गृहिणी—इन तीनों रूपों से प्रकट हो, ये देवियाँ ही तो संसार को सुचारु रूप से चला रही हैं। नहीं

तो, यह सारा खिलवाड़ दम भर में मटियामेट होजाता ।

बस, प्यारे! तीन कातिगड्डा तो आपको इतना सुनाया कि अब तो तन-मन-वचन तीनों थक गये। कहीं खोजने से, यदि दूसरे या तीसरे संस्करण में, और कुछ बातें मिलेंगी, तो सुनाऊँगा। अब इस समय यही कहना शेष है कि, इस पुस्तिका में जो कुछ है, सब "त्रिवेणी" कीसी सुख, सन्तोष और स्वर्ग की देने वाली है। इस लिये ख़ूब जी लगा कर देखो।

"लहरा रही है कैसी ?

लावण्यमय—त्रिवेणी !!!"

त्रि मू र्त्ति,

※

* *

'त्रिवेणी' का 'तीन तीन' की तैयारी तीन दिन में हुई। तीन ही दिन में इण्डियन प्रेस के प्रवीण प्रोप्राइटर के परम-परिश्रम से प्रिण्ट होकर प्रकाशित हुई। तदर्थ तीन बार धन्यवाद !!!

• • • 'देवेन्द्र' • • •

OUR PUBLICATIONS.

		Rs.	a.	p.
1.	Dravya Samgraha ...	4	8	0
2	Parmatma Prakash ..	2	0	0
3.	Husn-i-Avval (حسن اول)...	1	8	0
4.	Nyayavatara ..	0	8	0
5.	Nyaya Karnika ..	0	8	0
6.	The Science of Thought	0	8	0
7.	The Practical Path ...	2	0	0
8.	The Key of Knowledge	10	0	0
9.	The Jaina Law .	1	4	0
10.	Outlines of Jainism ...	3	0	0
11.	Warren's Jainism ...	1	0	0
12.	A peep behind the Veil of Karmas ..	0	2	0
13.	What is Jainism .	0	1	0
14	Jainism not Atheism .	0	2	0

PUBLISHER

KUMAR DEVENDRA PRASAD JAIN,

**The Central Jaina Publishing House,
Arrah (India.)**